# श्रीनारद की भगवत्-अनुभूति

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

एकबार नारद ऋषि को ज्ञात हुआ कि भगवान श्रीकृष्ण का ब्रज में प्रादुर्भाव हुआ है। यह समाचार सुनकर नारद अपनी वीणा बजाते हुए गोकुल जा पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने नंदराज के प्रासाद में दिव्य बालक के सुसज्जित रूप के मध्य महायोगीश्वर भगवान अच्युत का दिव्य दर्शन किया। दिव्य बालक भगवान स्वर्ण पलंग पर बिछाए नरम श्वेत वस्त्र पर सोए हुए थे एवं उनके चारों तरफ अति प्रसन्नचित्त प्रेम विह्वल भाव में गोप बालिकाएँ उनका रूप माधुर्य का रसपान कर रही थीं। उनका शरीर सुकुमार था एवं एक असाधारण निर्मल आभामंडल उनके श्रीमुख से मानों दिव्य श्री वर्षण कर रहा था। काली घुँघराली अलकों की लटें अपूर्व शोभा फैलाती हुई उनकी शय्या से भूमि पर्यन्त स्पर्श कर रहीं थी। बीच-बीच में वे थोड़ा-थोड़ा हँस देते थे, जिससे एक-दो दाँतों की झलक उनके रूप सौदर्य में और निखार ला देती थी। वे मानों अपने गृह को उज्ज्वल श्रीमंडित कर विराज रहे थे। उनको नग्न नन्हें शिशु के रूप में निरख कर नारद का मन अति-हर्षित हुआ। नारद ने तब नंदराज से कहा – ''तुम्हारे पुत्र के अतुलनीय प्रभाव से जो श्रीश्री नारायण के भक्तों का परम दुर्लभ जीवन होगा - यह इस जगत् में कोई नहीं जानता। शिव, ब्रह्मा आदि देवगण भी इस अद्भुत शिशु के प्रति निरंतर अनुराग रखना चाहेंगे। इसका चरित्र भी सर्वसाधारण के लिए आनंददायी होगा। अचिन्त्य प्रभावशाली तुम्हारे इस शिशु के प्रति स्नेहवश जो लोग इसके पुण्य चरित्र का सानंद चित्त से कीर्तन, श्रवण एवं अभिनंदन करेंगे, उनका कभी भी भवबंधन नहीं होगा। हे गोपवर! तुम परलोक की इच्छा का त्याग कर अनन्यचित्त से इस दिव्य बालक के प्रति अहैतुकी प्रेम करो।'' यह कहकर मुनीन्द्र नारद नंदभवन से विदा हुए। नंदराज ने भी विष्णुरूपी मुनीन्द्र को श्रद्धापूर्वक प्रणाम निवेदन कर उन्हें विदा किया।

इसके बाद महाभागवत नारद मन ही मन यह सोचने लगे कि श्री भगवान की नित्य कांता श्रीमति देवी भी निश्चय ही अपने नित्यपति श्रीकृष्ण भगवान के अवतीर्ण होने पर उनसे विवाहार्थ गोपीरूप धारण कर कहीं न कहीं अवश्य ही अवतीर्ण हुई होगी इसमें कोई संदेह नहीं है। अतएव ब्रजवासियों के घर-घर में घुमकर उन्हें खोजना होगा। इस प्रकार मन में विचार कर मुनीवर ब्रजवासीयों के प्रत्येक घर में अतिथि बन कर गये। बाद में ब्रजवासी उनको विष्णुरूप में पूजने लगे। गोपगणों के मध्य नंदनंदन के प्रति उत्कृष्ट प्रेमभाव देखकर नारद ने उनलोगों के प्रति प्रणाम निवेदन किया। तत्पश्चात् नारद नंदजी के मित्र वृषभानु के घर पधारे। वृषभानु द्वारा नारद की विधिवत् पूजा करने के पश्चात् नारद ने वृषभानु से जिज्ञासा किया –''साधु! सुना है; आप अपनी धार्मिकता के लिए विख्यात है। आपके क्या कोई सुयोग्य पुत्र या सुलक्षणा कन्या है जिसके माध्यम से आपकी कीर्ति समस्त लोकों में परिव्याप्त हो सके? मुनिवर के द्वारा इस कथन के पश्चात् भानु ने अपने महान तेजस्वी पुत्र को बुलाकर उससे नारद को प्रणाम निवेदन करवाया। तदन्तर अपनी कन्या को दिखाने हेतु नारद को अपने अंत:पुर में प्रवेश कराया। अंत:पुर में प्रवेश करते ही भूमि पर शायित अपूर्व दिव्य बालिका को देखते ही नारद ने उसे अपने गोद में उठा लिया। उस समय नारद का चित्त स्नेह से विह्वल हो उठा। कन्या के अदृष्ट तथा अश्रुतपुर्व अद्भुत स्वरूप दर्शन कर श्रीकृष्ण के अतिप्रिय भक्त नारद मुग्ध हो गए। वे, एकमात्र रस के आधार परमानन्दमय सागर में डुबते-उतराते हुए दो पल के लिए पाषाणवत् स्थिर हो गये, तत्पश्चात् उन्होंने नेत्र खोला और एक अति आश्चर्यजनक रूप में मूक होकर बैठे रहे। तदन्तर अंतर्मुखी महाबुद्धिमान मुनिवर ने मन ही मन यह सोचा - ''मैंने स्वच्छन्दचारी होकर सम्पूर्ण लोकों में विचरण किया है, परन्तु इनके समान अलौकिक सौन्दर्यशाली कन्या मैंने कहीं भी नहीं देखा है। ब्रह्मलोक, रुद्रलोक एवम् इन्द्रलोक में भी मेरा

आवागमन है; किन्तु इस प्रकार की शोभा का एक अंश भी कहीं दृष्टिगोचर नहीं हुआ है। जिसके रूप से चराचर जगत् मोहित हो जाता है, उस महामाया भगवती गिरिजाकुमारी को भी मैंने देखा है, वे भी इनकी शोभा को प्राप्त नहीं कर सकती हैं। लक्ष्मी, सरस्वती, कांति और विद्या आदि देवियाँ भी इनकी छाया को स्पर्श कर सकें, ऐसा भी दिखाई नहीं देता है। अतएव इनके तत्व को ज्ञात करने की शक्ति मेरे मध्य है ही नहीं और अन्य कोई भी इस हरिबल्लभा को नहीं जानता है। इनके दर्शन मात्र से ही गोविन्द के चरण कमल में मेरा प्रेम स्वरूप प्रबुद्ध हुआ है; ऐसा प्रेम बोध पूर्वकाल में कभी घटित नहीं हुआ है। अभी अनन्त वैभवशालिनी इस देवी की मैं एकान्तचित्त से वंदना करता हूँ। इनका अतुलनीय रूप भगवान श्रीकृष्ण हेतु परमानन्दकारी होगा।'' इसप्रकार सोचकर नारद ने तब गोपवर वृषभानु को किसी कार्य हेतु अन्यत्र भेज दिया और किसी एकान्तस्थल पर जाकर वे उस दिव्यरूपिणी बाला की स्तुति करने लगे – ''देवी! अनन्त कांतिमयी महायोगेश्वरी! आपके अंग मनोहर एवं दिव्य है, जिनसे अनन्त मधुरिमा वर्षित होती ही रहती है। आपका हृदय अद्भुत रसानन्द से परिपूर्ण रहता है। आप किसी महासौभाग्यवश आज मेरे लोचनों की अतिथि बनी हो। हे देवी! आपकी दृष्टि अंत:करण में निरंतर सुखदायिनी प्रतीत हो रही है। आप अपने अंतकरण में महा-आनन्द में परितृप्त रहती हो, ऐसा प्रतीत हो रहा है। आपका यह प्रसन्न, मधुर तथा सौम्य मुखमंडल हृदय में सुखकारीरूप में किसी महान आश्चर्य को व्यक्त कर रहा है। अत्यंत शोभामयी आप रजोगुण की कलिका और शक्तिरूपिणी हो। सृष्टि, पालन एवम् संहार रूप में तुम्हारी ही स्थिति है। आप विशुद्ध सत्वमयी एवं दिव्यरूपिणी पराशक्ति तथा आपने ही परमानन्दमय वैष्णवधाम को धारण कर रखा है। ब्रह्मा और रूद्र द्वारा भी तुम बोधगम्य नहीं हो। आपका वैभव आश्चर्यमय है। योगीश्वरगण भी ध्यान मार्ग द्वारा आपका कभी स्पर्श नहीं कर सकते। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इच्छा शक्ति, ज्ञानशक्ति एवं क्रियाशक्ति ये सारी आपकी अंशमात्र है। मायामय होकर भी विशुद्धरूप धारण कर परमेश्वर महाविष्णु की जो अचिन्त्य विभूतियाँ हैं वे सारी आपकी अंशमात्र हैं। हे ईश्वरी! आप निस्संदेह आनन्दमयी शक्ति है; अवश्य ही श्रीवृंदावन में श्रीकृष्णचंद्र आपके संग क्रीड़ा करते रहते हैं। कुमारीवस्था में ही आपका दिव्य सौन्दर्य एवं रूप की महिमा समग्र विश्व को मुग्ध कर रही है, पता नहीं यौवन स्पर्शकाल में आपका रूप लावण्य एवं हास्य विलासयुक्त दर्शन कैसा अद्भुत एवं विलक्षण होगा? हे हरिबल्लभे आपके उस पूजनीय दिव्य स्वरूप का मैं प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूँ, जिससे नंदनंदन श्रीकृष्ण मुग्ध हो जायेंगे। नमो महेश्वरी माता ! मेरी तरह शरणागत प्रणत् भक्त हेतु दया परवश होकर आप अपने प्रकृत दिव्य स्वरूप को प्रकटित करो।''

इस तरह निवेदन कर नारद ने समर्पित चित्त से उस महा आनन्दमयी परमेश्वरी को नमस्कार किया एवं भगवान गोविन्द की स्तुति करते-करते वे उस देवी के प्रति अपलक देखने लगे। जिस समय वे श्रीकृष्ण का नाम-कीर्तन कर रहे थे, उसी समय भानुसुता ने चौदह वर्षीय परम लावण्यमय अतिसुन्दर दिव्यरूप धारण किया। उसीक्षण अन्य सभी गोपबालाएँ जो उनके समान बोधभूमि (अवस्था के बोध) पर समासीन थी अर्थात् जिन्होंने दिव्याभूषण एवं सुन्दर कंठहार धारण किया था, उन सबों ने उस बाला को चतुर्दिक घेर लिया। उसी समय उस बाला की सखियों ने चरणोदक के बूँदों द्वारा मुनिवर को सींचित कर कृपापूर्वक कहा – ''हे महाभाग मुनिवर! वस्तुत: आपने अपनी परमाभक्ति सहित श्रीभगवान की आराधना की है; क्योंकि ब्रह्मा, रुद्र आदि देवता, सिद्ध मुनीश्वर तथा अन्यान्य भगवद्भक्त के लिए उनका दर्शन दुर्लभ है, अद्भुत रूपसम्पन्ना, विश्वमोहिनी हरिप्रिया ने किसी अचिन्त्य सौभाग्यवश आज आपके दृष्टिपथ पर पदार्पण किया है। हे ब्रह्मर्षि! उठिये उठिये, अतिशीघ्र धैर्यपूर्वक इनकी परिक्रमा तथा बारम्बार इनको नमस्कार करिए। क्या आपको यह दर्शित नहीं हो रहा है कि इसी क्षण ये अंतर्धान हो जायेंगी, और इनके साथ आपका कभी भी सम्भाषण संभव नहीं होगा।'' उन प्रेमविह्वल सखियों के वचन सुनकर दो-मुहूर्त्त में ही नारद ने उस सुन्दरी बाला की परिक्रमा कर साष्टांग प्रणाम कर लिया। तत्पश्चात् भानु को पुकार कर कहा – ''आपकी पुत्री का प्रभाव अत्यंत व्यापक है। देवगण भी इनके महत्व को नहीं जान सकते हैं। जिस गृह में इनका चरण चिह्न रहता है वहाँ साक्षात् भगवान नारायण निवास करते हैं तथा समस्त सिद्धियों सहित लक्ष्मी देवी भी वहाँ वास करती हैं। आज से समस्त अलंकारों से अलंकृत इस सुन्दर कन्या को आप महादेवी समान समझकर अतियत्न पूर्वक अपने गृह में सुरक्षित रखिएगा।'' यह कहकर नारद ने हरि गुणगान करते-करते वृषभानु के गृह से प्रस्थान किया। *(विभिन्न पुराण ग्रन्थादि से संकलित)*

**–हिन्दी अनुवाद: मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख**